# POSITIVE TALK

ISSN 2582-6247 MULTIDISCIPLINARY, PEER-REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

## MULTILINGUAL INTERNATIONAL CONFERENCE

## 25-26 September 2023

భారతీయ సాహిత్యం - ఆధ్యాత్మికత | भारतीय साहित्य - आध्यात्मिकता
भारतीय साहित्ये - आध्यात्मिकता | Indian Literature - Spirituality

Executive Editor
Dr. P.K. Jayalakshmi

Editor
Krishnakant

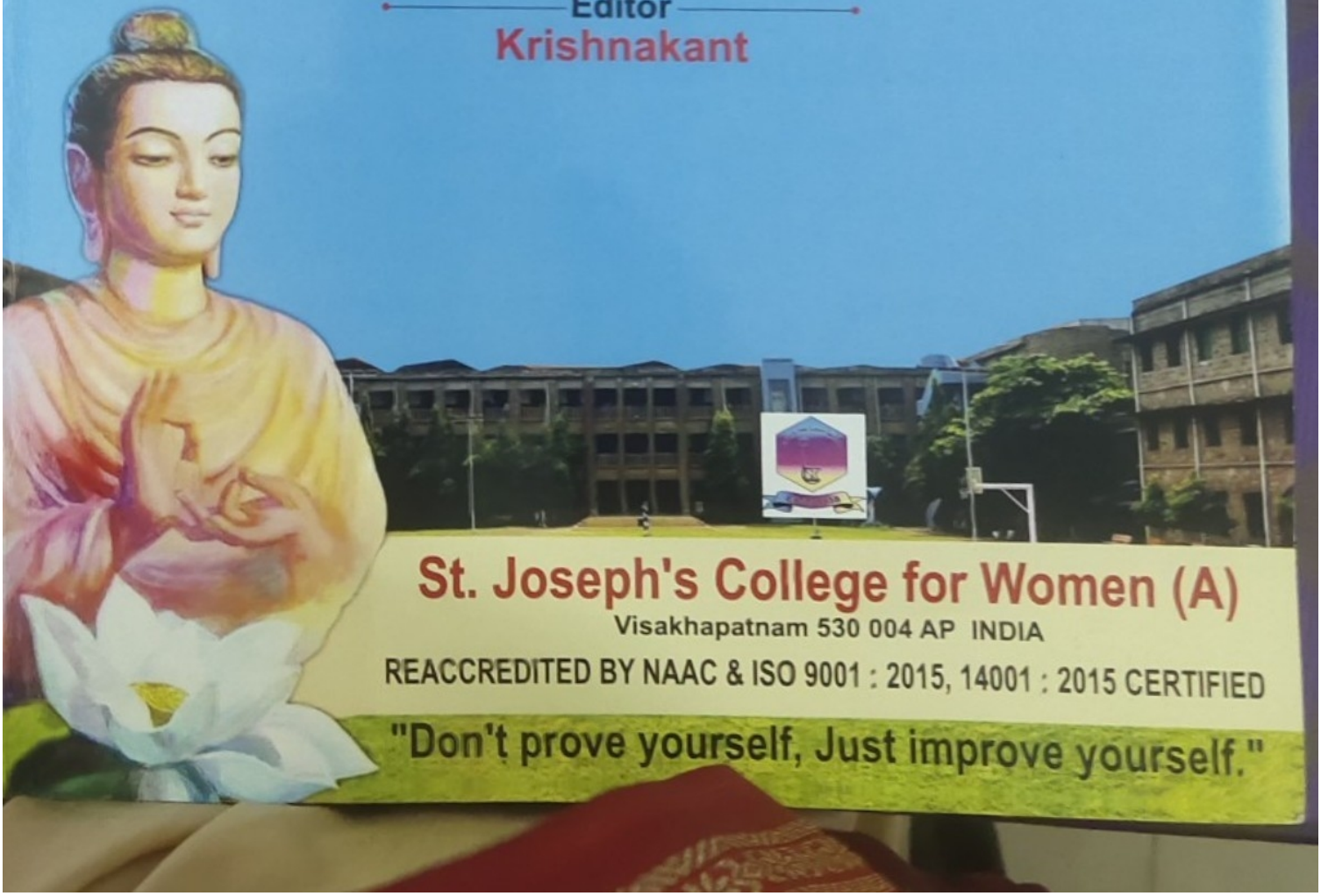

St. Joseph's College for Women (A)
Visakhapatnam 530 004 AP INDIA
REACCREDITED BY NAAC & ISO 9001 : 2015, 14001 : 2015 CERTIFIED

"Don't prove yourself, Just improve yourself."

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 17. | भक्ति साहित्य तथा मानवीय मूल्य<br>**डॉ. राजकुमार** | 57-59 |
| 18. | मानवीय सद्भावना के अभाव से संबंधित युगबोध और धार्मिक चेतना का स्वरूप<br>**श्रीमती पी. भीमा बाई/डॉ. के. सुधा** | 60-63 |
| 19. | हिंदी साहित्य में मानव मूल्यों के प्रतिष्ठापक - मुंशी प्रेमचंद<br>**डॉ. वी. सरोजिनी** | 64-66 |
| 20. | सिनेमा साहित्य में इतिहास और मानवीय मूल्य का प्रभाव<br>**कर्रा पृथ्वी** | 67-70 |
| 21. | संस्कृत साहित्य में मानव मूल्य<br>**डॉ. वी. मणि** | 71-72 |
| 22. | मानव जीवन और अध्यात्म<br>**रिशु सिंह** | 73-74 |
| 23. | भगवत गीता - ज्ञान योग<br>**कर्रा दुर्गा वीर भद्र प्रसाद** | 75-76 |
| 24. | शंकराचार्य के अद्वैतवाद का संक्षिप्त परिचय<br>**काकर मुत्यालराव** | 77-78 |
| 25. | Influence of Spiritual literature on Human values<br>**Dr. S.U.V. Raja Lakshmi** | 79-80 |
| 26. | Relevance of Bhagavad Geeta in Modern Society<br>**Dr. S.Shobha Rani** | 81-84 |
| 27. | Indian Literature- Spirituality and Mythical Consciousness<br>**Dr. Gayatri Indrakanti** | 85-87 |
| 28 | The mystical impact of sound on Human beings<br>**Dr. Ramanadham Ramesh Babu** | 88-89 |
| 29. | Relevance of Bhagavad Geeta in Modern Society<br>**Dr. B. Gayathri** | 90-93 |
| 30. | Strategic management for successful leadership-<br>A study with reference to epic Bhagavad Geeta<br>**Mrs. M. Jyothi** | 94-96 |
| 31. | Buddha and his Teachings on the path of dharma<br>**Mangalagiri Sahiti** | 97-98 |
| 32. | Impact of the Bhagavad Gita on Modern Society- A study<br>**Dr. M. Ramesh/Dr. D. Sahadevudu** | 99-100 |
| 33. | आध्यात्मिक साहित्ये मानवीयमूल्यानि<br>**डा. दासरि. कोटेश्वरराव:** | 101-100 |

# मानवीय सद्भावना के अभाव से संबंधित युगबोध और धार्मिक चेतना का स्वरूप

**श्रीमती पी. भीमा बाई**
शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग,
आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम
**डॉ. के. सुधा** शोध निदेशक
हिन्दी विभाग, विशाखा सरकारी महिला महाविद्यालय, विशाखपट्टनम

समसामयिक युग में मानव समाज के विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत सद्भावना का अभाव मानव जीवन को त्रस्त करता जा रहा है। लोगों में ईर्ष्या, क्रोध, लोभ और स्वार्थ के कारण आत्म निष्ठ होने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इन स्थितियों के कारण लोक कल्याण एवं मानव हित का लोप स्पष्टतः देखा जा सकता है। सांप्रदायिक सद्भावना का अनुसरण विश्व भर के लोगों के लिए अत्यंत उपयोगी माना जा सकता है। धार्मिक ग्रंथों में अनेक अनेक संदर्भ ऐसे प्राप्त होते हैं, जिनमें किसी भी युग के मनुष्य को इन स्थितियों से मुक्त होने का संदेश दिया गया है। इनका प्रचलन समसामयिक समाज के विकृति यथार्थ को सुधार कर उसे प्रगति पथ पर अग्रसर होने की प्रक्रिया को सरल बना सकता है। उदाहरण के रूप में बाइबिल की निम्नलिखित एक कथा द्रष्टव्य है।

**रानी एस्तेर**

एस्तेर फारस में रहने वाली एक यहूदी महिला थी। उसके माता-पिता की मौत हो गई थी, इसलिए उसके चचेरे भाई मौर्दक ने उसकी देखभाल की थी। उसे राजा के महल में राज्य की अन्य युवतियों के साथ आमंत्रित किया गया था। राजा एक नई रानी चाहता था, और उसने एस्तेर को चुना था। राजा का हामान नाम का नौकर था, जो बहुत शक्तिशाली था। हामान ने राजा को देश पर शासन करने में सहायता की थी। राजा ने सभी को हामान के आगे सिर झुकाने को कहा था। लेकिन मौर्दक ने हामान के आगे

सिर नहीं झुकाया। मौर्दक केवल प्रभु के आगे ही सिर झुकाता था। इससे हामान नाराज हो गया। वह मौर्दक और बाकी सभी यहूदियों को सजा देना चाहता था। हामान ने राजा से कहा कि यहूदियों ने राजा की कानून व्यवस्था का पालन नहीं किया था इसलिए राजा हामान को नयी कानून व्यवस्था बनाने देता है कि एक निश्चित दिन पर सारे यहूदियों को मार दिया जाएगा।

मौर्दक ने एस्तेर को राजा से बात करने को कहा। राजा हामान की न्याय व्यवस्था को बदल सकता था और यहूदियों को बचा सकता। था। लकिना एस्तेर को डर लग रहा था। कई बार राजा ने बिना निमंत्रण के उससे बात करने आए लोगों को मार डाला था। मोर्दक ने एस्तेर से उन यहूदियों के बारे में सोचने केलिये कहा जो मार दिये होंगे। मोर्दक ने कहा कि हो स्कता है कि यहूदियों को बचाने के लिये प्रभु ने एस्र को राजा के महल में रखा है। एस्पेर जानती थी कि उसे राजा से बात करनी चाहिये, भले ही बदले में उसे मार दिया जाय। उसने सभी यहूदियों और उसके नौकरों से कहा कि वे उनके साथ उपवास रखें। तीन दिन तक उपवास करने के बाद एस्पेर ने स्वयं को तैय्यार किया और राजा से मिलने चली गई।

जब वह राजा के पास पहुंची तो राजा के हाथ में राजदण्ड था न कि तलवार। उसने समझा कि राजा उसे देखकर खुश है और उसे मारना नहीं चाहता है। राजा ने उससे पूछा कि वह क्या चाहती है। एस्पेर ने उसे बताया कि उसके लोग खतरे में हैं। हामान की न्याय व्यवस्था के कारण उसे और सभी यहूदियों को मार डाला जायेगा। राजा ने हामन से क्रोधित होकर उसे मार डाला। उसने एक नई कानून व्यवस्था बनाई जो यहूदियों के हित में है। इस प्रकार हम देखते हैं कि एस्पेर का प्रभु पर विश्वास और राजा से बात करने की उसका धैर्य ने उसकी प्रजा को बचा लिया।

यदि ईश्वर की कृपा हम पर हों तो हम किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च पद प्राप्त कर सकते हैं। एक अनाथ और दुर्भाग्य्रस्त युवा महिला एस्पर ने अपने भाई के पास शरण ली थी। उन्हें ईश्वर की सहायता पर पूरा विश्वास था। वह दुर्बल अवस्था में भी किसी तरह अपना जीवन यापन करती थी। वह सदैव परमेश्वर एवं अपने बुजुर्गों के प्रति सम्मान की भावना व्यक्त करती थी। अपने विनम्र आचरण तथ आज्ञाकारिता से उसने राजा की कृपा भी अर्जित की। वह अपने आसपास के लोगों से बहुत प्रेम करती थी और इसी कारण वह अपने साथ अपने भाई और अपने लोगों को हामान के षड्यंत्र से बचाने में सफल हुई। उसने अपनी विनम्रता से राजा को प्रसन्न कर अपने लोगों की रक्षा की और हामान के जुल्म को मिटाया। इस प्रकार देखा जा सकता है कि हम अच्छे काम करके अनेक लोगों के लिये आदर्श बनते हुए अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

यदि हम बड़ों के प्रति आज्ञाकारिता और ईश्वर के प्रति श्रद्धा दिखाते हुए सबके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हुए, विश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं तो हम जो कुछ भी करेंगे, उसमें परमेश्वर की सहायता अवश्य मिलेगी। हमें एस्थेर के जीवन को आदर्श मानकर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक के रुप में खड़े रहना है। नम्रता, राष्ट्रप्रेम, श्रद्धा, क्षमा गुण, और लोक कल्याण की आकांक्षी आदि गुण किसी भी मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक माने गए हैं। परंतु समसामयिक समाज के विविध सदस्यों में इन गुणों का अभाव इस समाज को बहुत ही परेशान कर रहा है। नारी श्रद्धा का प्रतीक मानी जाती है। उसमें इन गुणों का अस्तित्व समाज एवं संसार के हित के लिए अत्यंत उपयोगी माना जा सकता है। इसी वास्तविकता को प्रकाश में लाने वाली बाइबल की एक और कथा नीचे प्रस्तुत है।

**नाओमी और रूथ :**

पारिवारिक क्षेत्र में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण ही नहीं परंतु सर्वोपरि होता है। विशेष रूप से सास बहू का संबंध जिस परिवार में सद्भाव पूर्ण रहता है। वह परिवार सुखी समय व्यतीत करता है। आजकल ज्यादातर देखा जा रहा है, कि सास बहू के मध्य संबंध कठोर और एक दूसरे के प्रति दुर्भावना रहते हैं। कभी सास क्रोधित रहती है, कभी बहू। दोनों का यह संघर्ष पर पूरे परिवार के ऊपर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इसीलिए बाइबल में कहा गया है, कि सास बहू का संबंध अत्यंत प्रेम पूर्ण एवं ममतामई

होनी चाहिए। इस संबंध में बाइबल की नाओमी और रूथ नामक सास, बहू की कहानी अत्यंत उल्लेखनीय मानी जा सकते हैं। इस कहानी की वस्तु चेतना संक्षेप में इस प्रकार है।

बहुत समय पहले, जब न्यायाधीशों का शासन था, तभी इतना बुरा समय आया कि लोगों के पास खाने के लिये पर्याप्त भोजन तक न था। एलीमेलेक नामक एक व्यक्ति ने तभी यहूदा के बेतलेहेम को छोड़ दिया। वह, अपनी पत्नी और दो पुत्रों के साथ मोआब के पहाड़ी प्रदेश में चला गया। उसकी पत्नी का नाम नाओमी था और उसके पुत्रों के नाम महलोन और किल्योन थे। बाद में, नाओमी का पति, एलीमेलेक मर गया। अत: केवल नाओमी और उसके दो पुत्र बचे रहे। उसके पुत्रों ने मोआब देश की स्त्रियों के साथ विवाह किया। एक की पत्नी का नाम ओर्पा और दूसरे की पत्नी का नाम रूथ था। फिर महलोन और किल्योन भी मर गये। अत: नाओमी अपने पति और पुत्रों के बिना अकेली हो गई। उन्होंने उस प्रदेश को छोड़ा जहाँ वे रहती थीं। इस विकराल स्थिति से बचने के लिए नाओमी अपनी दोनों बहुओं को लेकर यहूदा नामक शहर में जा बसी।

कुछ समय बाद नाओमी ने यह अनुभव किया कि दोनों बहू फिर से विवाह करके अपने अपने परिवार बसा सकती है। तब नाओमी ने अपनी बहुओं से कहा, 'तुम दोनों को अपने घर अपनी माताओं के पास लौट जाना चाहिए। तुम मेरे तथा मेरे पुत्रों के प्रति बहुत दयालु रही हो। मैं प्रार्थना करती हूँ कि ईश्वर, आप दोनों को अच्छा घर और पति पाने में सहायता करे।' नाओमी ने अपनी बहुओं को प्यार किया और वे दोनों रोने लगीं। तब ओर्पा ने नाओमी का चुम्बन लिया और वह चली गई। किन्तु रूथ ने उसे बांहों में भर लिया और वही ठहर गई।

रूथ ने कहा, 'आपको छोड़ कर अपने लोगों के पास जाने के लिये मुझे विवश मत करो! मुझे अपने साथ चलने दो। जहाँ कहीं तुम जाओगी, मैं आप के साथ जाऊँगी। जहाँ कहीं तुम सोओगी, मैं वही सोऊँगी। तुम्हारे लोग, मेरे लोग होंगे। तुम्हारा परमेश्वर, मेरा परमेश्वर होगा। जहाँ तुम मरोगी, मैं भी वहीं मरूँगी और में वहीं दफनाई जाऊँगी। केवल मृत्यु ही हम दोनों को अलग कर सकती है।' इस प्रकार रूथ, नाओमी के प्रति अपनी, निष्ठा और भक्ति का प्रदर्शन किया। बाइबल की इस कहानी से वर्तमान यांत्रिक युग के बहुयें यही सीखेगी कि विवाह के अनंतर उनकी सास ही उनकी माता हैं और उनकी सेवा करना उनका सौभाग्य होगा। इसके पश्चात मानव जीवन में क्षमागुण की महत्ता पर बल देने वाली बाइबिल की एक और कहानी इस प्रकार है।

**युसूफ की कहानी**

युसूफ, याकूब के 12 पुत्रों में से एक था। उसके पिता उसे अन्य सभी से अधिक प्रेम करते थे और उन्होंने उसे एक रंगीन लबादा दिया था। उसके भाई उससे इतनी ईर्ष्या करते थे कि एक दिन वे उसे मारने की साजिश कर बैठे। उसके भाईयों ने उसे गुलाम के रूप में बेच दिया। उसे ईजिप्ट ले जाया गया और अंतत: फिरौन के अधिकारियों में से एक पोतीपर का प्रबंधक बन गया। पोतीपर की पत्नी ने उसे बहकाने की असफल कोशिश की और जोसेफ पर झूठे आरोप लगाए जाने के बाद उसे कैद कर लिया गया। फीरौन के स्वप्न की व्याख्या करने की क्षमता के कारण जोसफ को मिस्त्र का राज्यपाल बनाया गया। उन्होंने अकाल के समय की तैयारी के लिए बुद्धिमानी से देश की उपज की अकाल के दौरान याकूब के बेटे आपूर्ति के लिए युसूफ से विनती करने के लिए मिस्र आए। उन्होंने उसे नहीं पहचाना लेकिन जब उसे संतुष्टि हो गई कि वे सुधर गए हैं तो उसने बड़ी खुशी से खुद को पहचाना। यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को मिस्र में आकर बसने के लिए आमंत्रित किया। कहानी पुराना नियमों में वर्णित है।

इस कहानी के उस पहलू पर ध्यान केंद्रित करें, जो क्षमा का एक सुंदर उदाहरण है। जोसेफ के भाई अपहरण और हत्या के प्रयास के दोषी हैं। जोसफ ने उन्हें पूरी तरह से माफ कर दिया है। अगर हम जोसेफ के परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करे, तो जानेंगे कि वह अपना जीवन एक अहंकारी युवक के रूप में शुरु करता है। उसके परिवार के सदास्यों के द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया है। उसने अपना अधिकांश जीवन झूठे आरोपों पर जेल में

बिताया, लेकिन वर्षों बाद उसके भाईयों पर जब अकाल की समस्या आई, तब उन भाइयों ने जोसफ के पास आकर उससे सहायता की भीख मांगी। तब जोसफ ने उन्हें माफ करके उनको अपनाया। वह एक संवेदनशील, परिवार उन्मुख व्यक्ति है।

भले ही जोसफ को अपने जीवन की दौड़ की मंजिल का पता नहीं था, फिर भी अपने जीवन में घटित घटना के हर मामले से सीखा। वह एक गुलाम के रूप में जिस राज्य में वह रहने आया था। वह उस पूरे राज्य का शासन करने में सक्षम हो गया। वह अपने भाइयों के साथ खड़ा रहा जो उससे छुटकारा पाना चाहते थे। उसने विषम और प्रतिकूल परिस्थितियों का बहादुरी से सामना किया और न केवल अपने देश के लिए बल्कि पड़ोसी देश की भूख की पीड़ा को भी मिटा दिया।

जीवन में किसी न किसी मोड़ पर विपरीत परिस्थितियां हमें अनेक नैतिक मूल्य सिखाती है । जोसफ के जीवन से संबंधित प्रसंग हमें पाँच तथ्य सिखाते हैं। क्षमा करने की प्रवृति को विकसित करना, पापपूर्ण विचारों को अस्वीकार करना, समस्या के उत्पन्न होने पर चतुराई से उसका सामना करना और उसके परिणामों को समझना। हमारे बारे में परमात्मा के दृष्टिकोण को जानना और प्रलोभनों पर विजय पाने का प्रयास करना, उनसे जितना संभव हो सके उतना दूर रहना। हमें जीवन में विभिन्न प्रकार के प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है जैसे नशा, व्यभिचार, आदि बुरी आदतें। लेकिन हमें अपने आपको न खोते हुए खुद को उन आदतों और इच्छाओं से दूर रखना चाहिए, जो हमें बुरा बनाती हैं। जोसफ अपने जीवन में किसी भी प्रकार के दुर्व्यसनों से दूर रहा करता था। नशाखोरी ,व्यभिचार जैसी आदतों से वह अपने आपको सदैव मुक्त रखा था। उसके संगत में आने वाला कोई भी व्यक्ति उसे ऐसी बुरी आदतों में फंसा नहीं सकता था। वह अपने व्यक्तित्व को सदैव दृढ़ रखकर अपने परिसर में परिव्याप्त विकृत यथार्थ से दूर रहा करता था और उस यथार्थ के कारण त्रस्त लोगों की सहायता करते हुए उन्हें उससे दूर ले जाने की प्रभावी चेष्टा करता था।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि धार्मिक क्षेत्र में विशेष रूप से ईसाई धर्म की आध्यात्मिक सामग्री में ऐसे अनेक दुष्टांत है जो वर्तमान युगबोध के कारण मानव मन को संतुष्टि प्रदान करते हुए सहृदय पाठकों को अपने जीवन में आदर्श मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं। उपर्युक्त तीन संदर्भों में पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में आजकल व्याप्त विकृत यथार्थ से संबंधित युगबोध को सुधारने की दिशा में प्रभावी प्रयास देखा जा सकता है। एक अन्यतम तथ्य यह है, कि इन प्रसंगों में उपर्युक्त तीन क्षेत्रों के अंतर्गत सद्भावना के प्रचलन के जो दुष्टांत देखे जा सकते हैं, उनका प्रयास समसामयिक मानव जीवन में अत्यंत उपयोगी माना जा सकता है।

अंतत: यह कहना उपयुक्त होगा कि वर्तमान युग के लोगों को अहिंसा, इंद्रिय निग्रह, दया, क्षमा ,दान शीलता, त्याग और सत्य निष्ठा जैसी आठ प्रवृत्तियों को अपनाना अत्यन्त अनिवार्य होगा। इसी तथ्य को निम्नलिखित संस्कृत श्लोक में देखा जा सकता है।

अहिंसा प्रथमं पुष्पम्, पुष्पं इन्द्रिय निग्रहम्
सर्वभूत दया पुष्पं, क्षमा पुष्पं विशेषत:
दान पुष्पं ध्यान पुष्पं योग पुष्पं तथैवच
सत्यम् अष्टविधं पुष्पं विष्णुं प्रसीदं करेत।